

SANSKRIT

9<sup>TH</sup> CLASS

## INDEX

- Chapter 1 भारतीवसन्तगीतिः
- Chapter 2 स्वर्णकाकः
- Chapter 3 गोदोहनम्
- Chapter 4 कल्पतरूः
- Chapter 5 सूक्तिमौक्तिकम्
- Chapter 6 भ्रान्तो बालः
- Chapter 7 प्रत्यभिज्ञानम्
- Chapter 8 लौहतुला
- Chapter 9 सिकतासेतुः
- Chapter 10 जटायोः शौर्यम्
- Chapter 11 पर्यावरणम्
- Chapter 12 वाडमनःप्राणस्वरूपम्

## Chapter 1 भारतीवसन्तगीतिः

### 2MARKS

#### 1. अधोलिखितानां सूक्तानां भावं हिन्दी भाषायां लिखत

(निम्नलिखित सूक्तियों के भाव हिन्दी भाषा में लिखिए)

(क) वसन्ते लसन्तीह सरसा रसालाः कलापाः ललित-कोकिला-काकलीनाम्।

(ख) कलिन्दात्मजायास्सवानीस्तीरे नतां पङ्क्तिमालोक्य मधुमाधवीनाम्।

(ग) मलयमारुतोच्चुम्बिते मञ्जुकुञ्ज स्वनन्तीन्ततिम्प्रेक्ष्य मलिनामलीनाम्।

उत्तराणि:

(क) भावार्थ-प्रस्तुत सूक्ति पं० जानकी वल्लभ शास्त्री द्वारा रचित 'काकली' नामक ग्रन्थ से संकलित पाठ 'भारतीवसन्तगीतिः' में से उद्धृत है। वसन्त ऋतु में प्रकृति का रोम-रोम खिल उठता है। वसन्त पञ्चमी के दिन सरस्वती की पूजा भी की जाती है। सम्भवतः इसी अवसर पर मधुर मञ्जरियों से पीली तथा सरस आम के वृक्षों पर बैठे हुए कोयलों की कूक से पूरा वातावरण शोभायन हो रहा है। अतः कवि माँ सरस्वती से प्रार्थना करता है कि आप अपनी सरस वीणा को बजाओ।

(ख) भावार्थ प्रस्तुत सूक्ति पं० जानकी वल्लभ शास्त्री द्वारा रचित 'काकली' नामक ग्रन्थ से संकलित पाठ 'भारतीवसन्तगीतिः' में से उद्धृत है। यमुना नदी का तट बेंत की लताओं से घिरा हुआ है। नदी के जल की फुहारों से मिली हुई मन्द-मन्द बहने वाली वायु से फूलों से खिली हुई माधवी लता झुक गई है। इस कारण यमुना नदी के तट के आस-पास का दृश्य अत्यन्त रमणीय हो गया है। ऐसे मनोरम दृश्य में कवि सरस्वती माँ से वीणा बजाने की प्रार्थना कर रहा है।

(ग) भावार्थ-प्रस्तुत सूक्ति पं० जानकी वल्लभ शास्त्री द्वारा रचित 'काकली' नामक ग्रन्थ से संकलित पाठ 'भारतीवसन्तगीतिः' में से उद्धृत है। चन्दन की सुगन्ध से सुगन्धित वायु के स्पर्श से कोमल पत्तों वाले वृक्षों से रमणीय स्थान में काले भ्रमरों के गुनगुनाने की मधुर आवाज गूँज रही है। यह आवाज अत्यन्त मनमोहक तथा आकर्षक है। इस आवाज को सुनकर कवि ने माँ सरस्वती

प्रश्न 1.

वाणिः कीदृशीं वीणां निनादयतु?  
(सरस्वती कैसी वीणा को बजावे?)

उत्तर :

वाणिः नवीनां वीणां निनादयतु। (सरस्वती नवीन वीणा को बजावे।)

प्रश्न 2.

कविः कीदृशीं गीतिं गातुं कथयति? (कवि किस प्रकार का गीत गाने को कहता है?)

उत्तर :

कविः ललित-नीति-लीनां गीतिं गातुं कथयति। (कवि सुन्दर नीतियों से युक्त गीत गाने को कहता है।)

प्रश्न 3.

वसन्ते कीदृशाः रसालाः लसन्ति? (वसन्त में कैसे आम सुशोभित होते हैं?)

उत्तर :

वसन्ते सरसाः रसालाः लसन्ति। (वसन्त में रसयुक्त आम सुशोभित होते हैं।)

प्रश्न 4.

ललितकोकिलाकाकलीनां कलापाः कदा विलसन्ति?  
(मनोहर कोयलों की कूज का समूह कब सुशोभित होता है?)

उत्तर :

ललितकोकिलाकाकलीनां कलापाः वसन्ते विलसन्ति।  
(मनोहर कोयलों की कूज का समूह वसन्त में सुशोभित होता है।)

प्रश्न 5.

कस्याः तीरे सनीरे समीरे मन्दं मन्दं वहति?  
(किसके किनारे पर जलकणों से युक्त शीतल वायु धीरे-धीरे बहती है?)

उत्तर :

कलिन्दात्मजायाः सवानीरतीरे सनीरे समीरे मन्दं मन्दं वहति।  
(यमुना के तट पर जलकणों से युक्त शीतल वायु धीरे-धीरे बहती है।)

प्रश्न 6.

कीदृशीं पंक्तिम् अवलोकयतु? (किस प्रकार की पंक्ति को देखो?)

उत्तर :

मधुमाधवीनां नतां पंक्तिम् अवलोकयतु। (मधुर मालती लताओं की झुकी हुई पंक्ति को देखो।)

**4MARKS**

प्रश्न 1.

स्वनन्तीम् केषां ततिं प्रेक्ष्य वीणां निनादय? (ध्वनि करती हुई किनकी पंक्ति को देखकर वीणा बजाओ?)

उत्तर :

स्वनन्तीम् अलीनां मलिनां ततिं प्रेक्ष्य वीणां निनादय।

(ध्वनि करती हुई काले भौरों की पंक्ति को देखकर वीणा बजाओ।)

प्रश्न 2.

किम् आकर्ण्य सुमं चले? (क्या सुनकर पुष्प हिलने लगे?)

उत्तर :

वाणे: अदीनां वीणाम् आकर्ण्य सुमं चलेत्।

(सरस्वती की ओजस्विनी वीणा को सुनकर पुष्प हिलने लगे।)

प्रश्न 3.

वसन्ते नदीनां कान्तसलिलं किं कुर्यात्?

(वसन्त में नदियों का स्वच्छ जल क्या करे?)

उत्तर :

वसन्ते नदीनां कान्तसलिलं सलीलम् उच्छलेत्। (वसन्त में नदियों का स्वच्छ जल उछलित हो उठे।)

प्रश्न 4.

'भारतीवसन्तगीतिः' पाठः मूलतः कुतः संकलितः?

(‘भारतीवसन्तगीतिः’ पाठ मूलतः कहाँ से संकलित है?)

उत्तर :

‘भारतवसन्तगीतिः’ पाठः मूलतः ‘काकली’ इति गीतसंग्रहात् संकलितः।

(‘भारतवसन्तगीतिः’ पाठ मूल रूप से ‘काकली’ नामक गीतसंग्रह से संकलित है।)

प्रश्न 5.

कविः नवीनां वीणां निनादयितुं कां प्रति कथयति?  
(कवि नवीन वीणा बजाने के लिए किससे कहता है?)

उत्तर :

कविः नवीनां वीणां निनादयितुं वाणिं प्रति कथयति।  
(कवि नवीन वीणा बजाने के लिए सरस्वती से कहता है।)

प्रश्न 6.

मधुरमञ्जरीपिञ्जरीभूतमालाः कदा लसन्ति?  
(सुन्दर आम्रपुष्प की पीले वर्ण की पंक्तियाँ कब सुशोभित होती हैं?)

उत्तर :

मधुरमञ्जरीपिञ्जरीभूतमालाः वसन्ते लसन्ति।  
(सुन्दर आम्रपुष्प की पीले वर्ण की पंक्तियाँ वसन्त-ऋतु में सुशोभित होती हैं।)

प्रश्न 7.

मन्दमन्दं किम् वहति? (धीरे-धीरे क्या बहता है?)

उत्तर :

सनीरं समीरं मन्दमन्दं वहति। (जलयुक्त वायु धीरे-धीरे बहती है।)

प्रश्न 8.

कलिन्दात्माजा का वर्तते?  
(कलिन्द की पुत्री कौन है?)

उत्तर :

कलिन्दात्मजा यमुनानदी वर्तते।  
(कलिन्द की पुत्री यमुना नदी है।)

प्रश्न 9.

कविः मधुमाधवीनां कीदृशां पंक्तिं द्रष्टुं कथयति?  
(कवि मधुर मालती लताओं की कैसी पंक्ति देखने के लिए कहता है?)

उत्तर :

कविः मधुमाधवीनां नतां पतिं द्रष्टुं कथयति।  
(कवि मधुर मालती लताओं की झुकी हुई पंक्ति को देखने के लिए कहता है।)

प्रश्न 10.

अलीनां ततिः कुत्र कुत्र ध्वनिं कुर्वन्ति?  
(भ्रमरों की पंक्ति कहाँ-कहाँ पर ध्वनि करती है?)

उत्तर :

अलीनां ततिः ललितपल्लवे पादपे, पुष्पपुञ्जे मञ्जुकुङ्गे च ध्वनि कुर्वन्ति।  
(भ्रमरों की पंक्ति मन को आकर्षित करने वाले पत्तों से युक्त वृक्षों पर, पुष्पों के समूह पर तथा सुन्दर कुञ्जों में ध्वनि (गुञ्जार) करती है)

**7MARKS**

1. निनादय नवीनामये वाणि!  
वीणाम् मृदं गाय गीति ललित-नीति-लीनाम्।  
मधुर-मञ्जरी-पिञ्जरी-भूत-मालाः  
वसन्ते लसन्तीह सरसा रसालाः  
कलापाः ललित-कोकिला-काकलीनाम् ॥1॥

अन्वय-अये वाणि! नवीनाम् वीणाम् निनादय, ललित-नीति-लीनाम् गीतिं मृदुं गाय। इह वसन्ते मधुर-मञ्जरी-पिञ्जरी-भूत सरसाः रसालाः मालाः, ललित-काकलीनाम्-कोकिला कलापाः लसन्ति। निनादय।

शब्दार्थ-निनादय = बजाओ। अये वाणि = हे वाणी की देवी सरस्वती। ललित = मनोहर, सुन्दर। नीति-लीनाम् = नीतियों से पूर्ण। मृदं = कोमल। गाय = गान करो। मञ्जरी = आम्र मञ्जरी। पिञ्जरी-भूत-मालाः = पीले वर्ण से युक्त पंक्तियाँ। लसन्तीह (लसन्ति + इह) = सुशोभित हो रही हैं, यहाँ। सरसाः = मधुर। रसालाः = आम के वृक्ष। काकली = कोयल की कूक। कोकिल = कोयल। कलापाः = समूह।।

प्रसंग-प्रस्तुत गीत/श्लोक संस्कृत विषय की पाठ्य-पुस्तक 'शेमुषी प्रथमो भागः' में संकलित पाठ 'भारतीवसन्तगीतिः' से उद्धृत है। यह आधुनिक संस्कृत-साहित्य के प्रसिद्ध कवि पं० जानकी वल्लभ शास्त्री द्वारा रचित गीतिकाव्य 'काकली' से संकलित है।

सन्दर्भ-निर्देश-इस गीत में माँ सरस्वती से वीणा बजाने की प्रार्थना की गई है, जिसकी ध्वनि से प्रकृति का रोम-रोम खिल उठे।

सरलार्थ-हे माँ सरस्वती! नवीन वीणा को बजाओ और सुन्दर नीतियों से पूर्ण गीत का मधुर गान करो। इस वसन्त ऋतु में मधुर मञ्जरियों से पीली तथा सरस आम के वृक्षों की पंक्तियाँ एवं आकर्षक कूक वाली कोयलों के समूह सुशोभित हो रहे हैं।

भावार्थ-हिन्दू संस्कृति के अनुसार वसन्त पञ्चमी का विशेष महत्त्व है। इस दिन माँ सरस्वती की आराधना एवं पूजा की जाती है। कवि ने माँ सरस्वती से यह कामना की है कि आपकी वीणा की ध्वनि से जनमानस के लिए सुन्दर नीतियों का निर्माण हो। इस वसन्त ऋतु में आम की मञ्जरियों एवं कोयलों की कूक से प्राकृतिक वातावरण आकर्षक एवं मनोरम बन जाए।

2. वहति मन्दमन्दं सनीरे समीरे  
कलिन्दात्मजायास्सवानीरतीरे,  
नतां पङ्क्तिमालोक्य मधुमाधवीनाम् ॥2॥

अन्वय-कलिन्दात्मजायाः सवानीर तीरे सनीरे समीरे मन्द-मन्दं वहति नतां मधुमाधवीनाम् पङ्क्तिम् आलोक्य निनादय।

शब्दार्थ-कलिन्दात्मजायाः = कलिन्दी की पुत्री यमुना के। सवानीरतीरे = बेंत की लताओं से युक्त तट पर। सनीरे = जल की बिन्दुओं से युक्त। समीरे = वायु के। वहति = बहती है। नतां = झुकी। आलोक्य = देखकर। मधुमाधवीनाम् = मधुर माधवी लताओं पर।

प्रसंग-प्रस्तुत गीत/श्लोक संस्कृत विषय की पाठ्य-पुस्तक 'शेमुषी प्रथमो भागः' में संकलित पाठ 'भारतीवसन्तगीतिः' से उद्धृत है। यह आधुनिक संस्कृत साहित्य के प्रसिद्ध कवि पं० जानकी वल्लभ शास्त्री द्वारा रचित गीतिकाव्य 'काकली' से संकलित है।

सन्दर्भ-निर्देश इस श्लोक में बेंत की लताओं से घिरे यमुना नदी के तट पर वीणा बजाने की प्रार्थना की गई है।

सरलार्थ-यमुना नदी के बेंत की लताओं से घिरे हुए तट पर जल की बिन्दुओं से युक्त वायु के मन्द-मन्द बहने पर फूलों से झुकी हुई मधु-माधवी लता को देखकर हे सरस्वती! नवीन वीणा का वादन करो।

भावार्थ-कल-कल की ध्वनि करती हुई बहने वाली यमुना नदी के तट पर फूलों से खिली माधवी लता का दृश्य कवि के मन को मोह रहा है। ऐसे सुन्दर प्राकृतिक दृश्य में कवि वीणा बजाने की प्रार्थना कर रहा है।



3. ललित-पल्लवे पादपे पुष्पपुजे  
मलयमारुतोच्चुम्बिते मञ्जुकुजे,  
स्वनन्तीन्ततिम्प्रेक्ष्य मलिनामलीनाम् ॥3॥

अन्वय-मलयमारुतोच्चुम्बिते ललित-पल्लवे पादपे, पुष्पपुजे मञ्जुकुजे मलिनाम् अलीनाम्  
स्वनन्तीं ततिं प्रेक्ष्य। निनादय।

शब्दार्थ पादपे = पौधों पर। पुष्पपुजे = फूलों के समूह पर। मलय = चन्दन। मारुतोच्चुम्बिते  
= वायु से स्पर्श किए हुए। मञ्जुकुजे = सुन्दर लताओं से आच्छादित स्थान। स्वनन्ती =  
ध्वनि करती हुई। ततिं = पंक्ति, समूह को। प्रेक्ष्य = देखकर। मलिनाम् = काले रंग के।  
अलीनाम् = भ्रमरों की।

प्रसंग-प्रस्तुत गीत/श्लोक संस्कृत विषय की पाठ्य-पुस्तक 'शेमुषी प्रथमो भागः' में संकलित  
पाठ 'भारतीवसन्तगीतिः' से उद्धृत है। यह आधुनिक संस्कृत साहित्य के प्रसिद्ध कवि पं०  
जानकी वल्लभ शास्त्री द्वारा रचित गीतिकाव्य 'काकली' से संकलित है।

सन्दर्भ-निर्देश-फूलों पर बैठे हुए भ्रमरों की पंक्ति को देखकर माँ सरस्वती से वीणा बजाने  
के लिए कहा गया है।

सरलार्थ-चन्दन वृक्ष की सुगन्धित वायु के स्पर्श से मन को आकर्षित करने वाले पत्तों वाले  
वृक्षों पर, पुष्पों के समूह पर तथा सुन्दर लताओं से आच्छादित स्थान पर काले वर्ण वाले  
भ्रमरों की गुजार को देखकर हे सरस्वती! नवीन वीणा का वादन करो।

भावार्थ-चन्दन की सुगन्ध से सुगन्धित वायु के स्पर्श वाले वृक्षों तथा फूलों के समूह पर बैठे  
भ्रमरों की पंक्ति को देखकर सरस्वती से वीणा बजाने की बात कही गई है।

4. लतानां नितान्तं सुमं शान्तिशीलम्  
चलेदुच्छलेत्कान्तसलिलं सलीलम्,  
तवाकर्ण्य वीणामदीनां नदीनाम् ॥4॥

अन्वय-तव अदीनां वीणाम् आकर्ण्य नितान्तं शान्तिशीलम् लतानां सुमं चलेत्, नदीनां कान्त सलिलं सलीलम् उच्छलेत्। निनादय।

शब्दार्थ-लतानाम् = लताओं के। नितान्तम् = अत्यधिक। सुमं = पुष्प। शान्तिशीलम् = शान्ति से युक्त। कान्तसलिलं = स्वच्छ जल। उच्छलेत् = उछल पड़े। अदीनाम् = ओजस्विनी। आकर्ण्य = सुनकर। सलीलम् = क्रीड़ा करता हुआ, लीलापूर्वक।

प्रसंग-प्रस्तुत गीत/श्लोक संस्कृत विषय की पाठ्य-पुस्तक 'शेमुषी प्रथमो भागः' में संकलित पाठ 'भारतीवसन्तगीतिः' से उद्धृत है। यह आधुनिक संस्कृत साहित्य के प्रसिद्ध कवि पं० जानकी वल्लभ शास्त्री द्वारा रचित गीतिकाव्य 'काकली' से संकलित है।

सन्दर्भ-निर्देश-इस श्लोक में सरस्वती की वीणा को सुनकर फूलों के खेलने तथा नदियों के जल के बहने के विषय में बताया गया है

सरलार्थ हे सरस्वती! तुम्हारी ओजस्विनी वीणा को सुनकर लताओं के अत्यधिक शान्ति से युक्त फूल खिल उठे और नदियों का स्वच्छ जल क्रीड़ा करता हुआ उछल पड़े। हे सरस्वती! नवीन वीणा का वादन करो।

भावार्थ-माँ सरस्वती की वीणा की ध्वनि से न खेलने वाले फूल भी खिल उठे तथा नदियों में स्वच्छ जल प्रवाहित होने लगे, ऐसी कामना कवि द्वारा की गई है।

वस्तुनिष्ठप्रश्नाः -

प्रश्न 1.

अये वाणि! नवीना ..... निनादय। रिक्तस्थाने पूरणीयपदमस्ति -

- (अ) वीणाम्
  - (ब) वीणायाः
  - (स) वीणा
  - (द) वीणायाम्
- उत्तरम् :  
(अ) वीणाम्

प्रश्न 2.

'वसन्ते लसन्तीह सरसा रसाला' - इत्यत्र रेखाङ्कितपदे सन्धिः वर्तते -

- (अ) गुण'
  - (ब) अयादि
  - (स) दीर्घ
  - (द) यण
- उत्तरम् :  
(स) दीर्घ

प्रश्न 3.

"मन्दमन्दं सनीरे समीरे. ....।" रिक्तस्थाने पूरणीय क्रियापदं किम्?

- (अ) वहन्ति
  - (ब) वहति
  - (स) वहसि
  - (द) वहतः
- उत्तरम् :  
(ब) वहति

प्रश्न 4.

'नतां पंक्तिमालोक्य. ....।' इत्यत्र रेखाङ्कितपदे प्रयुक्तप्रत्ययः कः?

- (अ) तव्यत्
- (ब) क्त्वा
- (स) यत्
- (द) ल्यप्

उत्तरम् :  
(द) ल्यप्

प्रश्न 5.

'ललितपल्लवे पादपे पुष्पपुजे' इति पदेषु का विभक्तिः?

- (अ) सप्तमी
  - (ब) द्वितीया
  - (स) चतुर्थी
  - (द) तृतीया
- उत्तरम् :  
(अ) सप्तमी

### प्रश्न-निर्माणम् -

प्रश्न 1.

रेखाङ्कितपदमाधृत्य प्रश्न निर्माणं कुरुत -

1. अये वाणि! नवीनां वीणां निनादय।
2. अये वाणि! ललित-नीतिलीनां गीति मृदुं गाय।
3. इह वसन्ते सरसाः रसालाः लसन्ति।
4. वसन्ते ललितकोकिलाकाकलीनां कलापाः विलसन्ति।
5. वसन्ते मधुरमञ्जरीपिञ्जरीभूतमालाः लसन्ति।
6. यमुना कलिन्दात्मजानाम्नाऽपि ज्ञायते।
7. सवानीरतीरे समीरं मन्दमन्दं वहति।
8. मधुमाधवीनां नतां पङ्क्तिम् अवलोकयतु।
9. सनीरं मन्दमन्दं समीरम् अनुभवतु।
10. ललितपल्लवे पादपे खगाः कलरवं कुर्वन्ति।
11. पुष्पपुल्ले भ्रमराः गुञ्जन्ति।
12. मञ्जुकुञ्ज जनाः भ्रमन्ति।
13. सरस्वत्याः अदीनां वीणां श्रुत्वा सुमं चलेत्।
14. नदीनां कान्तसलिलं सलीलम् उच्छलेत्।
15. जनाः वीणां श्रुत्वा मोदन्ते।

16. अयं पाठः 'काकली' इति गीतसंग्रहात् संकलितः।

उत्तर :

प्रश्न-निर्माणम्

1. अये वाणि! काम् निनादय?
  2. अये वाणि! कीदृशीं गीतिं मृदु गाय?
  3. इह वसन्ते के लसन्ति?
  4. वसन्ते कासां कलापाः विलसन्ति?
  5. कदा मधुरमञ्जरीपिञ्जरीभूतमालाः लसन्ति?
  6. का कलिन्दात्मजानाम्नाऽपि ज्ञायते?
  7. कुत्र समीरं मन्दमन्दं वहति?
  8. कासां नतां पक्तिम् अवलोकयतु?
  9. कीदृशं समीरम् अनुभवतु?
  10. ललितपल्लवे पादपे के कलरवं कुर्वन्ति?
  11. कुत्र भ्रमराः गुञ्जन्ति?
  12. कुत्र जनाः भ्रमन्ति?
  13. कस्याः अदीनां वीणां श्रुत्वा सुमं चले?
  14. कासां कान्तसलिलं सलीलम् उच्छले?
  15. जनाः किम् श्रुत्वा मोदन्ते?
16. अयं पाठः कुतः संकलितः?

## भारतीवसन्तगीति: (वाणी (सरस्वती) का वसन्त गीत) Summary in Hindi

भारतीवसन्तगीति: पाठ-परिचय

प्रस्तुत गीत आधुनिक संस्कृत साहित्य के प्रख्यात कवि पं० जानकी वल्लभ शास्त्री की रचना 'काकली' नामक गीत संग्रह से संकलित है। शास्त्री जी ने संस्कृत साहित्य में आधुनिक विधा की रचनाओं को प्रारंभ किया। इनके द्वारा गीत, गज़ल, श्लोक आदि विधाओं में लिखी गई संस्कृत कविताएँ बहुत लोकप्रिय हुईं। उन्नीस वर्ष की आयु में इनकी संस्कृत कविताओं का संग्रह 'काकली' का प्रकाशन हुआ था।

प्रस्तुत गीत में वाणी की देवी माँ सरस्वती की वन्दना करते हुए यह कामना की गई है कि हे माँ सरस्वती! ऐसी वीणा बजाओ, जिसकी ध्वनि से मधुर मञ्जरियों से पीले पंक्ति वाले आम के वृक्ष, कोयल का कूजन, वायु का धीरे-धीरे बहना, अमराइयों में काले भ्रमरों का गुजार और नदियों का कल-कल की ध्वनि करता हुआ जल, वसन्त ऋतु में मनमोहक हो उठे। स्वाधीनता संग्राम की पृष्ठभूमि में लिखी गई यह गीतिका जनमानस के लिए नवीन चेतना का आह्वान करती है। इसके साथ ही ऐसे वीणा स्वर की परिकल्पना करती हैं जो स्वाधीनता प्राप्ति के लिए जन-समुदाय को प्रेरित करे।